ESTD : 1954

दिल्ली प्रिंटर्स एसोसिएशन

मासिक समाचार पत्रिका

संपादक : एच. एल. खन्ना केवल सदस्यों के लिए निःशुल्क वितरण हेतु अंकः जून 2018, मुद्रणः 29 जून 2018

आल इंडिया फेडरेशन ऑफ मास्टर प्रिंटर्स के महासचिव श्री अरविंद मर्डिकर को पिछले दिनों केंद्रीय राज्यमंत्री एमएसएमई श्री गिरिराज सिंह और वित्त राज्य मंत्री श्री शिव प्रताप शुक्ला जी से मुलाकात करने का अवसर मिला, जिसमें उन्होंनें प्रिटिंग उद्योग के मुद्दों पर बातचीत की तथा प्रिन्टर्स की समस्याओं के हल के लिए दिल्ली में फेडरेशन के प्रतिनिधि मंडल के लिए आमंत्रित किया। साथ में सांसद आर.के. सिन्हा भी मौजूद थे।

ए.आई.एफ.एम.पी. (AIFMP) अध्यक्ष श्री एएमएसजी अशोकन को जन्म दिन मुबारक!

आल इंडिया फेडरेशन ऑफ मास्टर प्रिंटर्स के अध्यक्ष श्री एएमएसजी अशोकन का जन्मदिन (24 जून) शिवाकाशी में धूमधाम से मनाया गया। उन्हें एआईएफएमपी के पदाधिकारियों के अलावा पूरे भारत की संबद्ध प्रिंटर्स की संस्थाओं ने बधाई देते हुए उनके दीर्घ आयु और अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुभकामनाएं प्रेषित कीं। दिल्ली प्रिंटर्स एसोसिएशन की तरफ से श्री अशोकन जी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

First choice of Printing Machine Manufacturers

Up to 60% cost reduction with
Busch Merlin Dry Rotary Claw Vacuum Pump

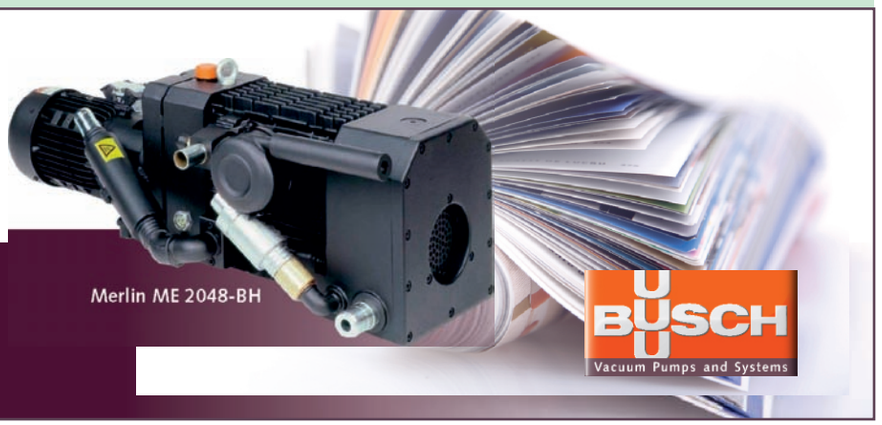

Busch Vacuum India Pvt Ltd.
Plot No.: 102-103, I Sector 5 I IMT Manesar I Gurgaon (Haryana) 122 050 I India
Phone: +91-9711991473 I sales@buschindia.com
www.buschindia.com

ESTD : 1954

President
Mr. Rajesh Sardana
98100-31996

Imm. Past President
Mr. Rajiv Gupta
98117-01764

Vice-presidents
Mr. Ajay Sharma
8178429924

Mr. Meghraj Bhati
98103-52633

Mr. Prakash Dass
98187-24948

Hon. General Secretary
Mr. Mahinder Budhiraja
93122-41788

Joint-secretaries
Mr. Atul Goel
98100-03943

Mr. Puneet Talwar
98110-81291

Treasurer
Mr. Kewal Krishan Singhal
98111-15945

Executive Members
Mr. Ashok Aggarwal
Mr. Ashok Kumar Nandra
Mr. D. K. Vohra
Mr. Deepak Bhatia
Mr. M. N. Pandey
Mr. Mohd Mustaqeem
Mr. P. K. Chauhan
Mr. P. N. Kapur
Mr. Prashant Aggarwal
Mr. Prabir Kumar Mukherjee
Mr. Raghu Nandan Sharma
Mr. Sandeep Aggarwal
Mr. Sanjay Sharma
Mr. Shiv Mittal
Mr. Simranjot Singh Bhatia
Mr. Sunil Jain
Mr. Vijay Goel
Mr. Vijay Jain
Mr. Vikas Gaur
Mr. Vivek Jain

Executive Secretary
H.L. Khanna
9958043222

Delhi Printers' Association
Flat No. 26A,
Shanker Market,
New Delhi-110001
Tel. : 011-23414415
Telefax : 011-23412574
Email : delhiprinter@hotmail.com

विवाह आमंत्रण जैसी छपवाई प्रवेश पाती, घर–घर जाकर दे रहे बुलावा

ग्राम बकावां में शासकीय प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों ने जनसहयोग से वैवाहिक समारोह के आमंत्रण पत्रों की तर्ज पर 400 प्रवेश पाती छपवाई है। विद्यार्थियों को स्कूल में प्रवेश के प्रति आकर्षित करने के लिए घर–घर जाकर आमंत्रण दे रहे हैं। इस पहल का सकारात्मक परिणाम है कि निजी विद्यालयों के 10 विद्यार्थियों ने भी अब तक यहां प्रवेश ले लिया है।

चार हजार आबादी वाले ग्राम बकावां में प्राथमिक विद्यालय में 180 बच्चे पढ़ाई कर रहे हैं। यहां शिक्षा का स्तर सुधारने के लिए शिक्षक पढ़ाने के तरीके में नवाचार कर निजी स्कूलों की तर्ज पर पढ़ा रहे हैं। जनसहयोग से यहां पहले भी फर्नीचर आदि की व्यवस्था की गई थी। अब जनसहयोग से ही डेढ़ हजार रुपए में 400 प्रवेश पाती छपवाकर बच्चों को आमंत्रित कर रहे हैं। संस्था के प्रधान कैलाश कुशवाह ने बताया कि बकावां के साथ ही समीपस्थ ग्राम बेड़िया, लोंधी, कानापुर में छह निजी स्कूल संचालित हो रहे हैं।

गांव में करीब 1 हजार ऐसे बच्चे हैं, जो कक्षा पहली से पांचवीं में पढ़ने योग्य हैं। गांव के 600 बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ने जाते हैं। कुशवाह ने बताया कि फिलहाल शासकीय स्कूल में 180 विद्यार्थी पढ़ रहे हैं। आमंत्रण के प्रयोग के बाद 10 बच्चे निजी स्कूलों से और 10 अन्य बच्चों ने प्रवेश लिया है। पिछले सत्र में 56 नए विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया था। 30 और बच्चों को प्रवेश दिलाने का लक्ष्य है।

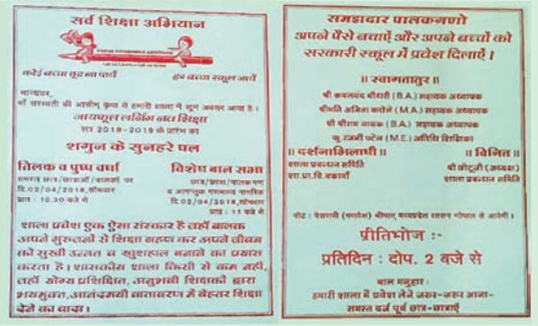

ये सुविधाएं हैं

–पर्याप्त फर्नीचर की व्यवस्था, एलसीडी के माध्यम से ऑडियो व वीडियो से शिक्षा देना, कम्प्यूटर, पुस्तकालय और स्वास्थ्य परीक्षण और रेडियो एवं टीवी प्रसारण की सुविधा है।

वर्ष 2018–2019 का वार्षिक शुल्क के लिए सदस्यों से अनुरोध

जिन सदस्यों ने अपना वर्ष 2018–2019 का वार्षिक शुल्क अभी तक नहीं भेजा है उन्हें याद दिलाया जा रहा है कि अपना शुल्क स्वयं/कोरियर/डाक द्वारा शीघ्रअतिशीघ्र भेजने की कृपा करें। कुछ सदस्य ऐसे भी हैं जिनका वार्षिक शुल्क 2017–2018 का भी नहीं आया है, उन्हें फिर याद दिलाया जाता है कि लगातार दो वर्ष तक वार्षिक शुल्क न आने पर एसोसिएशन की सदस्यता स्वयं समाप्त हो जाती है।

यदि आप वार्षिक चंदा बैंक में सीधे जमा करना चाहते हैं तो संस्था के निम्नलिखित दो बैंक खातों में से किसी में भी जमा करवा सकते हैं तथा जमा करने के बाद संस्था को सूचित कर दें। बैंक का विवरण इस प्रकार है।

Delhi Prnters' Association
Current A/c No. 0050231000001
IFSC Code-HDFC0CTJCBL
Bank Name-The Janata
Co-Operative Bank Ltd.
नोटः– कृपया HDFC खाता धारक
उपरोक्त बैंक खाते में शुल्क जमा न करें।

Delhi Prnters' Association
Saving A/c No. 90042010031370
IFSC Code-SYNB0009004
Bank Name - Syndicate Bank

Printing, Processing and Binding Sponsored by

CAMBRIDGE PRESS

1/1268, Bara Bazar, Kashmiri Gate, Delhi-110006
Phone : 9810031996
Email:-cambridgepress@gmail.com

अध्यक्ष की कलम से

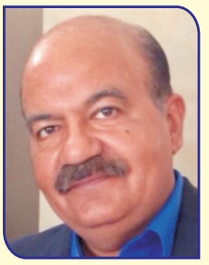

सर्वविदित है कि प्रिंटिंग उद्योग में उपयोग होने वाले विभिन्न प्रकार के कच्चे मालों में पेपर तथा इंक सबसे अधिक महत्वपूर्ण व आवश्यक हैं। किन्तु प्रत्येक वर्ष पेपर तथा इंक के दामों में लगातार वृद्धि होती रहती है जिसके कारण मुद्रकों को काफ़ी कठिनाइयों तथा हानि का सामना करना पड़ता है।

पिछले चार महीनों में लगभग सभी प्रकार के पेपर के दामों में धीरे-धीरे वृद्धि होते रहने के कारण 5 से 10 प्रतिशत दाम चढ़ गये हैं। इस वर्ष की पहली जून से ही इंक के भाव 5 प्रतिशत बढ़ा दिए गए हैं। जहाँ तक पेपर के दामों में आए उछाल की बात करें तो पेपर डीलर कहते हैं कि इस लगातार वृद्धि में उनका कोई हाथ नहीं है। जो भी वृद्धि हो रही है उसके लिए केवल पेपर मिलें जिम्मेदार हैं। सूत्रों के अनुसार चीन, जापान एवं भारत में पेपर की मांग सबसे अधिक है। अतः अधिक पेपर बनाने के लिए लकड़ी व लुग्दी की माँग इतनी बढ़ गयी है कि इनका आयात बढ़ गया है। दूसरी ओर लुग्दी उत्पादकों द्वारा वार्षिक रखरखाव के लिए अपने संयन्त्र बन्द रखने तथा वेस्ट पेपर के आयात पर सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगाने के कारण पेपर बनाने के लिए कच्चे माल की कमी हो गयी है। परिणामतः कच्चे माल की कीमतें बढ़ने के कारण तैयार पेपर के दाम बढ़ रहे हैं। लुग्दी के आयात पर मई 2012 के बाद से आयात सीमा शुल्क शून्य होने के कारण वर्तमान में पेपर बनाने के लिए लुग्दी का आयात 125 लाख टन हो गया है।

साधारणतयाः ईंधन एवं अमरीकी डालर के भाव में आए उतार-चढ़ाव का असर भी पेपर के दामों पर पड़ता है। यद्यपि यह एक अच्छी ख़बर नहीं है किन्तु आज के पैट्रोल, डीज़ल तथा डालर के भाव में लगातार होती वृद्धि को देखा जाए तो मुद्रकों, प्रकाशकों, मुद्रण-ग्राहकों तथा पैकेजिंग कन्वर्टर्स को अगले कुछ महीनों के भीतर पेपर के दामों के दूसरे दौर की बढ़ोत्तरी के लिए तैयार रहना चाहिए।

-राजेश सरदाना
अध्यक्ष

महासचिव की कलम से

जीवन में किसी भी व्यवसाय को शुरू करने के लिए हमें उस क्षेत्र विशेष की अधिकतम जानकारी होनी चाहिए। उसी प्रकार किसी व्यवसाय में नौकरी पाने के लिए हमें उस क्षेत्र की पर्याप्त जानकारी तथा अनुभव होना आवश्यक है। इस प्रकार की जानकारी व प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए हमें एक योग्य एवं अनुभवी शिक्षक से उचित शिक्षा लेनी होती है।

पौराणिक काल से चली आ रही सभ्यता के अनुसार हम देखते हैं तथा पता चलता है कि पुरातनकाल में शिष्यों को विभिन्न प्रकार की शिक्षा लेने के लिए किसी योग्य गुरू के आश्रम अथवा गुरूकुल में वर्षों रहना होता था। इस गुरू-शिष्य परम्परा के अंतर्गत शिक्षार्थी जीवन में काम आने वाली लगभग सभी जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् ही वापिस घर आते थे। आज से लगभग चार-पाँच दशक पूर्व तक मुद्रण उद्योग में भी कम पढ़े हैल्पर अथवा इंकमैन जैसे कारीगर प्रैस में कार्यरत रहते हुए अपने से सीनियर कारीगरों से धीरे-धीरे प्रशिक्षण लेते रहते थे। इस प्रकार की शिक्षा देने वाले सीनियर मशीनमैन को गुरू जी या उस्ताद जी बुलाया जाता था।

किन्तु आज के परिवेश में तेज़ी से नित नई प्रिंटिंग तकनीकों के विकास होने से, जिसमें डिजिटल प्रिंटिंग प्रमुख है, पुराने सभी तरीके बदल गए हैं। ऐसे बदलाव में आने वाली कठिनाइयों व पेचीदगियों से उभरने के लिए केवल एक विशेशज्ञ तथा मार्गदर्शक पर्याप्त नहीं है क्योंकि किसी भी मार्गदर्शक अथवा विशेषज्ञ को किसी भी व्यवसाय के प्रत्येक क्षेत्र की पूरी जानकारी नहीं होती है। अतः हमें एक से अधिक मार्गदर्शक का सहारा लेना पड़ता है। साथ ही यह ज़रूरी नहीं है कि हम किसी बड़ी उम्र वाले मार्गदर्शक से ही सहायता लें। आज की युवा पीढ़ी नई तकनीकों की जानकारी बहुत तेज़ी से सीख जाती है और वह अपने से बड़ी उम्र के लोगों का मार्गदर्शन बेहतर तरीके से कर पाते हैं। कम उम्र के युवक रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षेत्र में बहुत तेज़ी से आगे बढ़कर सफल हो रहे हैं। दूसरी ओर परिपक्व उम्र के व्यक्ति जीवन तथा व्यवसाय के अन्य क्षेत्रों में अपने अनुभव के आधार पर बेहतर मार्गदर्शक साबित होते हैं। न तो ज्ञान की कोई सीमा होती है और न ही ज्ञान प्राप्त करने की कोई उम्र। ज्ञान एक अथाह सागर है जिससे हम पूरे जीवन लगातार नई-नई सीख लेते रहते हैं। अपने व्यवसाय में सफलता पाने के लिए हमें अपने व्यवसाय के किसी सफलतम व्यक्ति को आदर्श रोल मॉडल मान कर उसके कदमों पर चलने का प्रयास करना चाहिए।

-महिन्द्र बुद्धिराजा
महासचिव

M.K.TRADING COMPANY

Deals in :
All Kinds of Offset Printing Material
& Book Binding Material

Authorised Distributor
SAKATA INX INDIA PVT. LTD.
TOYO INK INDIA PVT. LTD.

C-4/15, Ground Floor, Krishna Nagar, Delhi-51
Ph.: 011-22093611, M.: 9873362611
Email : mktradngco@gmail.com

ब्रेल लिपिः नेत्रहीनों की आंख–नाक–कान से आगे की ओर

आज के समय में पढ़ा–लिखा होना कितना जरूरी हैं, यह बात किसी से छिपी नहीं है. पढ़ोगे–लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे तो होगे खराब– ऐसे ढेर सारे स्लोगन आपने अलग–अलग जगह चस्पा देखे होंगे.

ये साफ तौर पर पढ़ाई की महत्ता को बताते हैं. आमतौर पर माना जाता है कि पढ़ने के लिए आंखों का होना बहुत जरूरी है. बिना आंखों के शिक्षा संभव नहीं है, किन्तु ब्रेल लिपि की खोज ने इसको आसान कर दिया.

चूंकि, वर्तमान में इसका प्रयोग करके आंखों से दिव्यांग लोग भी पढ़ाई कर अच्छी खासी नौकरी पाने में सफल हो रहे हैं, इसलिए आईए जानने की कोशिश करते हैं कि इस लिपि की खोज कैसे हुई–

शुरुआती नाम 'मून टाइप' रखा गया

नेत्रहीनों के पास सब कुछ होता है. बावजूद इसके उनकी जिंदगी किसी काले अंधेरे की तरह होती है. ऐसे में पढ़ाई ही उनके लिए एक ऐसा तरीका होता है, जिसके बल पर वह सारी दुनिया को जान पाते हैं. इसके लिए वह एक खास तरह की लिपि का प्रयोग करते हैं, जिसे 'ब्रेल लिपि' कहा जाता है.

यूं तो इस लिपि को आधार देने में सबसे पहला नाम 'वैलेन्टिन होय' का लिया जाता है. माना जाता है कि वह पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने इस लिपि को कागज पर उतारा.

किन्तु, कुछ लोग इसे नहीं मानते. उनके अनुसार 1845 में इंग्लैंड के 'विलियम मून' ने इसको खोजा था. उन्होंने इस लिपि को रोमन अक्षरों की रूपरेखा में बनाया, जिसे 'मून टाइप' के नाम से जाना गया.

शुरुआत में इस लिपि का प्रयोग कठिन था, बावजूद इसके नेत्रहीनों की शिक्षा के लिए इसे एक बड़ा कदम माना गया.

'ब्रेल लिपि' को एक नेत्रहीन ने ही बनाया

'मून टाइप' के रुप में नेत्रहीनों की शिक्षा के लिए एक लिपि की खोज हो तो चुकी थी, किन्तु वह इतनी जटिल थी कि उसे सीखना आसान नहीं था.

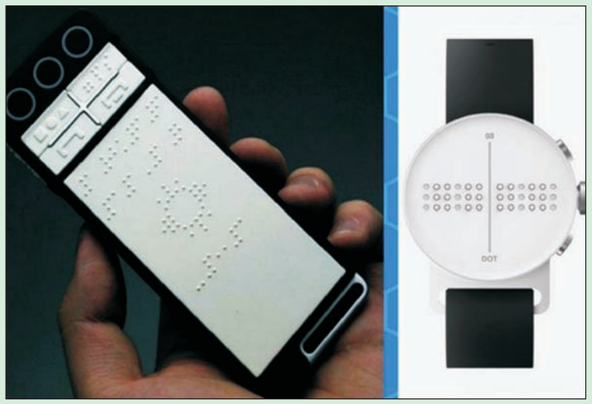

लुई ब्रेल

'लुई ब्रेल' नामक व्यक्ति ने इस बात को समझा और इसे सरल बनाने की कोशिश जारी कर दी. उनकी मेहनत रंग लाई और वह एक नई लिपि की खोज करने में सफल रहे. उन्होंने अपनी इसी लिपि को नाम दिया, ब्रेल लिपि.

गजब की बात तो यह थी कि 'लुई ब्रेल' खुद नेत्रहीन थे!

असल में 4 जनवरी 1809 को फ्रांस में जन्मे लुई महज तीन साल के थे, जब एक दुर्घटना में उनकी आंखों की रोशनी चली गई थी. इसके बाद उनके पिता ने उनको पेरिस के नेशनल 'इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ' में पढ़ने के लिए भेज दिया था. यह उस समय का जाना माना 'नेशनल इंस्टीट्यूट' था, जहां नेत्रहीनों को शिक्षित किया जाता था.

कहते हैं कि लुई इतने होनहार थे कि जल्दी ही उन्होंने शैक्षिक और व्यावसायिक, दोनों ही कौशल सीख लिए थे. इसके चलते वह चर्चित हुए और उन्हें फ्रांसीसी सैनिक 'चार्ल्स बारियर' से मुलाकात करने का मौका मिला. बारियर वह इंसान थे, जिन्होंने 'मून टाइप' लिपि को अलग–अलग ध्वनियों के आधार पर कोडमय किया था.

इससे नेत्रहीनों को काफी मदद मिलती थी.

आसान नहीं था 'ब्रेल लिपि' का सफर

लुई ब्रेल ने इसको उपयोगी समझा और जल्द ही सीख लिया. इस दौरान उन्होंने इसकी खामियों का अवलोकन किया. बाद में इनको दूर करने के इरादे से उन्होंने अपने प्रयोग शुरु कर दिए. लुई ब्रेल करीब 15 साल के रहे होंगे, जब उन्होंने एक सरल प्रणाली को विकसित किया.

वह केवल छह बिंदु पर पर आधरित थी, जिसकी तीन बिंदु एक लाइन बनाती थी और विभिन्न बिंदु से विराम चिह्नों को बनाया जाता था. इसके अलावा इसमें कुल 64 प्रतीकों का प्रयोग किया गया था.

लुई ब्रेल की लिपि सरल थी, इसलिए 18वीं सदी में पेंग्नर ने अपने संस्थान 'रोयले' में इसके प्रयोग की अनुमति दे दी. हालांकि, 1840 में उनके रिटायरमेंट के बाद इसका प्रयोग वहां बंद कर दिया. उनकी जगह पर रोयले के नए उत्तराधिकारी 'पियरे आर्मड डुफौ' ने लुई ब्रेल की इस तकनीक को वापस करते हुए 'पॉइट आधरित सिस्टम' का उपयोग शुरु करा दिया.

वह बात और है कि जल्द ही उन्हें लुई की लिपि की उपयोगिता समझ आ गई और उन्होंने इसे न सिर्फ अपने संस्थान में चालू करा दिया, बल्कि इसे सबसे बेहतरीन लिपि की मान्यता भी दी.

इसे लुई का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि 6 जनवरी 1852 में 'पियरे आर्मड डुफौ' चल बसे और एक बार फिर से उनकी लिपि को 'रोयले' से हटा दिया गया.

आधुनिक गैजेट्स में 'ब्रेल लिपि'

खैर, इन सभी अवरोधों को पार करते हुए लुई की तकनीक को आगे सबसे बेहतर माना गया. हां, इसमें समय के साथ–साथ कुछ बदलाव जरूर होते रहे. आज के दौर में आपने अमूमन नेत्रहीनों को फोन और घड़ी का इस्तेमाल करते देखा होगा. यह लुई की पद्धति के इस्तेमाल से ही संभव हो सका। आधुनिक समय में कई गैजेट्स को बनाया गया है, जिसमें इस तकनीक का ही प्रयोग किया गया है. सेलफोन को ही ले लीजिए, आज नेत्रहीन के लिए 'बी– टच 'नाम का एक सेलफोन आता है, जिसका लक्ष्य हैं कि नेत्रहीन भी अन्य लोगों की तरह दोस्तों के साथ बात कर सकें. यह एक टच स्क्रीन फोन हैं. इसकी स्क्रीन में ब्रेल लिपि का प्रयोग किया गया हैं.

इसी क्रम में नेत्रहीनों के लिए खास तरह की स्मार्टवॉच भी बनाई गई है, जिसको कोरियाई देश में बनाया गया. इस स्मार्टवॉच में में भी ब्रेल लिपि का प्रयोग किया गया है, जिसकी मदद से नेत्रहीन सही समय बताने में खुद को सहज महसूस करते हैं.

ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि 'ब्रेल लिपि' आज के युग में नेत्रहीनों के लिए एक वरदान से कम नहीं है. उसने न सिर्फ उनकी पढ़ाई का रास्ता आसान किया, बल्कि अपने पैरों पर खड़े होने का साहस भी दिया.

अब तो इस लिपि की सहायता से नेत्रहीन तमाम कार्य कर सकते हैं, जिसके बारे में पहले सोचा जाना भी मुमकिन नहीं था. आखिर कौन सोच सकता था कि नेत्रहीन फोन पर बातें कर सकेंगे या फिर समय देखने हेतु घड़ी का उपयोग कर सकेंगे.

पर यह हुआ है और आने वाले समय में शोध इससे भी आगे जायेंगे, इस बात में दो राय नहीं!

–रोर वेबसाइट पर दीपू शर्मा

अंधेरी ज़िंदगी में ज्ञान की रोशनी बिखेर रहे 'निमंत्रण पत्र'

इंदौर। दृष्टिबाधितों की अंधेरी जिंदगी में इल्म की रोशनी बिखेरने में पुराने निमंत्रण पत्र उपयोगी साबित हो रहे हैं। इन विशेष बच्चों की परवरिश और पढ़ाई की जिम्मेदारी संभाल रही संस्थाएं उपयोग में आ चुके कार्ड का इस्तेमाल ब्रेल लिपि के जरिए अध्ययन के लिए कर रही हैं।

शादियों के सीजन में अमूमन हर घर में दर्जनों विवाह पत्रिकाएं आती हैं, जिन्हें शादी के बाद आमतौर पर रद्दी में फेंक दिया जाता है। इसके अलावा कॉलेज स्टूडेंट्स के प्रोजेक्ट वर्क, कंपनियों के मैनुअल और पेंपलेट समेत कई पुराने डॉक्यूमेंट्स हैं जिनका उपयोग ब्रेल लिपि एजुकेशन में हो रहा है।

दृष्टिहीनों के लिए काम कर रही संस्थाएं इन लाखों पत्रिकाओं को एकत्र कर विशेष बच्चों को ब्रेललिपि सिखाने के लिए इस्तेमाल कर रही हैं। पहले भी इस तरह की कोशिशें होती रही हैं। मगर पर्यावरण संरक्षण में जागरुकता के साथ ही अब ऐसे प्रयासों में तेजी आ गई है।

हर साल 25 लाख पेपरों की जरूरत

'नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड' के डेवलपमेंट ऑफिसर संजय लोखंडे के मुताबिक शहर के विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों में करीब एक हजार दृष्टिबाधित बच्चे पढ़ रहे हैं। एक साल में एक बच्चे को ए4 साइज के 140 जीएसएम के करीब 2500 पेपर लगते हैं। सहारनपुर मिल से एक पेपर 1.90 रु. में मिलता है।

इस तरह मोटेतौर पर शहर के दृष्टिबाधित बच्चों की पढ़ाई पर साल में लगभग 50 लाख रु. पेपर पर खर्च होते हैं। मगर असल खर्च इससे आधा ही होता है क्योंकि दानदाताओं द्वारा लाखों की संख्या में पुराने आमंत्रण कार्ड संस्थाओं को मुफ्त में मुहैया कराए जाते हैं। जो बच्चे किसी संस्था से संबद्ध नहीं हैं उनमें से भी ज्यादातर को उनके मिलने–जुलने वाले लोग हर साल सैकड़ों पुराने कार्ड दे देते हैं।

लोकसभा स्पीकर के दफ्तर से भी मिलते हैं पेपर

मूक बधिर विद्यालय एवं अंधशाला के नितिन बड़जात्या बताते हैं कि आमंत्रण पत्रों के अलावा भी कई क्लबों, संगठनों और बड़ी संस्थाओं से हर साल हजारों की संख्या में ए4 साइज के (ड्राइंग शीट जैसे मोटे पेपर) मिल

जाते हैं। इनमें मुख्य रूप से कंपनियों के बेकार हो चुके कैटलॉग और पेम्पलेट होते हैं। इसके अलावा लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन, गोपीकृष्ण नीमा और सुरेश मिंडा सरीखे कई लोगों के घरों–दफ्तरों से हर साल कई बोरे मोटे पेपर्स संस्था को मुहैया कराए जाते हैं। महेश दृष्टिहीन कल्याण संघ से जुड़ी डॉली जोशी कहती हैं कि सामान्यतः कार्ड्स और मैनुअल आदि पर साधारण प्रिंटिंग से ब्रेल लिपि में पढ़ने वालों को कोई दिक्कत नहीं होती है, मगर लेमिनेटेड पेपर पर अक्षर का उभार स्पष्ट नहीं आ पाता है। उन्होंने बताया कि 44 साल पुरानी संस्था में फिलहाल 172 बच्चियां हैं। नर्सरी से 8वीं तक ये संस्थान के स्कूल में पढ़ती हैं, जबकि 9वीं से 12वीं क्लास की लड़कियां अहिल्या आश्रम में। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर की पढ़ाई ओल्ड जीडीसी में कराई जाती है।

- 1000 के करीब दृष्टिहीन बच्चे पढ़ते हैं शहर के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों में
- 25 लाख ए4 साइज, 140 जीएसएम के पेपर उपयोग करते हैं ये बच्चे सालभर में
- 1.5 से 2 रु. तक है एक पेपर की कीमत।
- 50 लाख रु. की कीमत के पेपर एक साल में चाहिए 1000 बच्चों को।
- 25 लाख रु. बच जाते हैं पुराने इन्विटेशन कार्ड्स के जरिए। सैकड़ों पेड़ भी बच जाते हैं।

Gagandeep Singh Luthra
+91-9818515827
+91-9313792706

People in Trade Since 1976

Tejinder Singh Luthra
+91-9810687907
+91-9015205252

EXCHANGE YOUR OLD ROLLERS WITH NEW ROLLERS AND GIVE ONLY COATING CHARGES OF STANDARD SIZE MACHINES

ROLLWALA

OUR SPECIALITY: BEST QUALITY & QUICK DELIVERY

Specialist in: Rubberising, P.U. Coating, Copperising, Stainless Steel Coating on Rollers, Riders & Cylinders

Rollwala Industries
Rollwala House, B-85, Sector-4, Bawana Indl. Area, DSIIDC, Delhi-110039
E-mail: rollwala@hotmail.com

Rollwala Sales Corporation
304, HSIIDC, Barhi Indl. Estate, G.T. Karnal Road, Ganaur Sonepat (Haryana)
Website : www.rollwala.net

Manpreet Singh
7838244085
8700280799

Kawaljeet Singh
Mintoo
7838402651

Harminder Singh
7011771475
7838402652

M.S.TRADERS

Specialist in : Offset Heidelberg Machine all Mechanical & Electrical Parts

A18/2, 2nd Floor, Ph.-II, Naraina Ind. Area.
M-33, Sector-3, Bawana Industrial Area

Email : harmidersingh1135@gmail.com
msgraphic4@gmail.com

भयंकर रोग फैलाते हैं मच्छर

मच्छर डेंगू, चिकनगुनिया और मलेरिया ही नहीं, लिम्फेटिक फाइलेरिया (हाथीपांव) भी फैलाता है। मच्छर के काटने पर मनुष्य के खून में पतले धागे जैसे कीटाणु तैरने लगते हैं और परजीवी की तरह वर्षो तक पलते रहते हैं। देश के 256 जिलों के 99 फीसदी गांवों में इसका उन्मूलन हो चुका है, लेकिन देश को फाइलेरिया मुक्त होने में अभी समय लगेगा। वर्ष 2016 की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में उस साल इस बीमारी के 87 लाख मामले दर्ज किए गए थे और 2.94 करोड़ लोग फाइलेरिया से होने वाली विकलांगता से पीड़ित थे।

मच्छर के लार से निकलकर मनुष्य के रक्त में परजीवी की तरह पलने वाले फाइलेरिया के वयस्क कीटाणु केवल मानव लिम्फ प्रणाली में रहते हैं और इसे नुकसान पहुंचाते रहते हैं। लिम्फ प्रणाली शरीर के तरल संतुलन को बनाए रखती है और संक्रमण का मुकाबला करती है।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा लिम्फेटिक फाइलेरिया (एलएफ) के उन्मूलन के लिए एक त्वरित योजना (एपीईएलएफ) शुरू की जा रही है। वर्ष 2020 के वैश्विक एलएफ उन्मूलन लक्ष्य को पूरा करने के लिए भारत को तेजी से काम करने की जरूरत है। हार्ट केयर फाउंडेशन के अध्यक्ष डॉ. के.के. अग्रवाल ने कहा, "फाइलेरिया, जिसे बोलचाल की भाषा में हाथीपांव भी कहा जाता है, अंगों, आमतौर पर पैर, घुटने से नीचे की भारी सूजन या हाइड्रोसेल (स्क्रोटम की सूजन) के कारण बदसूरती और विकलांगता का कारण बन सकता है। भारत में 99.4 प्रतिशत मामलों में वुकेरिए बैंक्रोफ्टी प्रजाति का कारण हैं।"

उन्होंने कहा, "यह कीड़े लगभग 50,000 माइक्रो फ्लेरी (सूक्ष्म लार्वा) उत्पन्न करते हैं, जो किसी व्यक्ति के रक्त प्रवाह में प्रवेश कर जाते हैं, और जब मच्छर संक्रमित व्यक्ति को काटता है तो

उसमें प्रवेश कर जाते हैं। जिनके रक्त में माइक्रो फ्लेरी होते हैं वे ऊपर से स्वस्थ दिखायी दे सकते हैं, लेकिन वे संक्रामक हो सकते हैं। वयस्क कीड़े में विकसित लार्वा मनुष्यों में लगभग पांच से आठ साल और अधिक समय तक जीवित रह सकता है। हालांकि वर्षों तक इसका कोई लक्षण दिखाई नहीं देता, लेकिन यह लिम्फैटिक प्रणाली को नुकसान पहुंचा सकता है।"

डॉ. अग्रवाल ने इसकी रोकथाम के लिए सुझाव देते हुए कहा, "मच्छर के काटने से बचाव रक्षा का सबसे अच्छा तरीका है, जब वाहक अधिक सक्रिय होते हैं, तब सुबह–शाम बाहर जाने से बचें। एक कीटनाशक छिड़की हुई मच्छरदानी के अंदर सोएं, लंबी आस्तीन वाली शर्ट और पतलून पहनें और खुद को कवर करके रखें, तीव्र खुशबू वाला सेंट न लगायें, वह मच्छरों को आकर्षित कर सकता है।

इस पेड़ से एसोसिएशन के प्रिंटर्स भवन को खतरा है

सदस्यों को सूचित किया जाता है कि एसोसिएशन के नारायणा स्थित प्रिंटर भवन की दीवार तोड़ता हुआ पेड़ खतरनाक रूप ले चुका है। इस पेड़ को हटाने के लिए वन विभाग सहित सम्बन्धित निगम अधिकारियों से निवेदन किया गया है, लेकिन अभी तक कोई कार्रवाही नहीं हुई। इस संबंध में एसोसिएशन सदस्यों से सहयोग करने का अनुरोध करती है।

delhiprintersassociation.org

आपकी सूचनार्थ दिल्ली प्रिंटर्स एसोसिएशन की नई वेब साइट निर्माणाधीन है। उक्त डोमेन नेम रजिस्टर्ड कराया जा चुका है। वेब डिजाइन और सॉफ्टवेयर डवलपमेंट का काम चल रहा है। आशा है, अगले महीने जुलाई में वेब साइट लांच कर दी जाएगी।

स्मृति शेष

एवन आर्ट्स के श्री संजीव क्वात्रा की माताश्री श्रीमती के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

स्मृति शेष

बत्रा आर्ट प्रैस के श्री एस.एस. बत्रा की धर्मपत्नी श्रीमती बलवंत कौर के दुखद निधन (27 मई 2018) पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

स्मृति शेष

डीपीए के उप प्रधान एवं पूर्वी दिल्ली नगर निगम पार्षद श्री अजय शर्मा के चाचा जी तथा डीपीए सदस्य अश्वनी शर्मा के पिताजी श्री रामदत्त शर्मा के दुखद निधन (29 जून 2018) पर एसोसिएशन श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

स्मृति शेष

मंगल प्रैस के श्री देवेन्द्र भार्गव के भाई श्री एन. के. भार्गव के दुखद निधन पर एसोसिएशन अपनी संवेदनाएं और श्रद्धांजलि अर्पित करती है। ईश्वर से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को यह असीम दुख सहने की शक्ति प्रदान करें।

NARSINGH & COMPANY

H.O. : 2241/36, First Floor, Sardar Javahar Singh Market, Kucha Chellan, Darya Ganj, New Delhi-110 002
Phone : 23280705, 23269068, 32968297
B.O. : 132, Patpar Ganj Industrial Area, Delhi-110 092
Phone : 9313119747, 32600932

SAGAR SCREEN

H.O. : 3601, Gali Hakim Bua Wali, Shyam Bhawan, Neta Ji Subhash Marg, Darya Ganj, New Delhi - 110 002
Phone : 23283700, 23265826
B.O. : Janak Nagar, Victoriya Colony, OP. Homegard office, Saharanpur (U.P.) Phone : 9358319676
B.O. : 96/29, Main Road, Jawala Nagar Delhi Road, Madhav Puram, Meerut (U.P.) Phone 9319630415

Authorized Dealer :-

MICRO INKS • PACKARD INKS • SICPA INDIA LIMITED • ZENITH RUBBER LIMITED
FUJIKURA RUBBER BLANKETES • TECHNOVA INKJET MEDIA • TECHNOVA PLATES & CHEMICALS

KERALA MASTER PRINTERS ASSOCIATION HAS ORGANIZED

ROMANCING PRINT 2018

In Palakkad on 24th June 2018. All India Federation of Master Printers (AIFMP) in association with Kerala Master Printers Association (KMPA) has organized ROMANCING PRINT 2018 on Sunday, 24th June 2018 at Hotel Tripenta, Malampuzha, Palakkad (Dt), Kerala. Earlier this event was conducted in Delhi only. Now for the last three years this event has been organized at the regional level and the holding of this activity has been designated to the respective Vice Presidents of the region. We at KMPA wish to express our sincere gratitude to Mr. O Venugopal, Vice President (South) of AIFMP for giving us the opportunity to organize this flagship event of AIFMP.

The programme was inaugurated by Smt. Prameela Sasidharan, Chairperson, Palakkad Municipality. Vice President (South) of AIFMP and the organizing committee chairman of Romancing Print 2018, Mr. O Venugopal welcomed the

delegates for this one day seminar. Also present on the dais were Mr. S. Saji, President, KMPA, Prof. Dr. Rajendrakumar Anayath; Vice Chancellor, Deenbandhu Chhotu Ram University of Science & Technology, Haryana and Mr. S.Manickam, President, Tamilnadu Master Printers Federation.

(Report : KMPA)

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं

Mr. Vivek Jain, Executive Committee Member and owner of Printers Converters Corporation, on June 6, 2018

Mr. Subhash Kohli, Former President of DPA and Owner of Shri Avatr Printing Press, on June 22, 2018

Mr. Simranjot Singh Bhatia, Executive Committee Member of DPA and owner of G.S.Bhatia Box Factory on June 22, 2018

वैवाहिक वर्षगांठ की हार्दिक शुभकामनाएं

Wedding Anniversary of Mr. & Mrs Atindra Jain, former President of DPA and owner of Opal Offset on June 25.

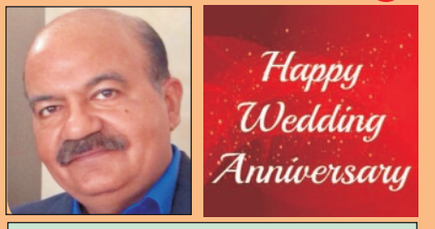

Wedding Anniversary of Mr. Rajesh Sardana, President of DPA and owner of Cambridge Press on June 20, 2018

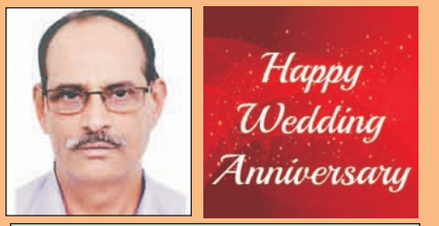

Wedding anniversary of Mr. M. N. Pandey, EC member and owner of Avantika Printers P. Ltd. on June 1, 2018.

FALCON VACUUM PUMPS

D LV 1000 C DV
For Komori Offset

D LV 1000 C DVVL
For Heidelberg Double Color

Manufactured, Sold & Serviced by :

FALCON VACUUM PUMPS & SYSTEMS

98, Ram Saroop Industrial Complex,
Mujessar, Faridabad - 121 005, (Hr.) INDIA
Phone : +91-129-4022837, 4026023
Fax : +91-129-4022837
E-mail : tkbind@hotmail.com
falcon_pumps@yahoo.co.in
Website: www.falconpumps.com

PRESSMAN ACADEMY FOR PRINT EDUCATION & RESOURCE

PressMan
CHENNAI / MUMBAI / NEW DELHI

1 Day Technical Seminar
PRESSROOM STANDARDIZATION
In New Delhi

CHIEF GUESTS

Mr. Rajesh Sardana
President
Delhi Printers' Association

Mr. Naveen Gupta
Honorary General Secretary
IPAMA

SPEAKERS

Milind Kale
DGM Business Development - Chemicals
TechNova Imaging Systems Pvt. Ltd.

A. Madhan Kumar
Product Manager
Provin Technos Pvt. Ltd.

K. Panthala Selvan
Managing Director
Pressman Solutions / Academy / Idealliance South Asia

Inderjit Singh Aidhen
Toyo Ink India Pvt. Ltd.
Deputy GM Offset - India

Tentative Program Agenda

09.30am	:	Registration
10.00am - 10.30am	:	Program Inauguration (Chief guests address to audience)
10.30am - 11.30am	:	**Session 1 -** Introduction to Pressroom Standardization - **Mr.K. Panthala Selvan** (Managing Director, Pressman / Idealliance SA, Chennai)
11.30am - 11.45am	:	Tea Break
11.45am - 12.45pm	:	**Session 2 -** Ink Chemistry by **Mr. Inderjit Singh Aidhen** (DGM - Toyo inks, New Delhi)
1.00pm - 1.45pm	:	Lunch
1.45pm - 2.45pm	:	**Session 3 -** Pressroom chemistry **Mr. Milind Kale** (DGM - BD - Chemicals, Technova Imaging systems Pvt Ltd)
2.45pm - 3.00pm	:	Tea break
3.00pm - 400pm	:	**Session 4 -** Press Standardisation **Mr.A. Madhan Kumar** (Product Manager - Provin Technos Pvt Ltd)
4.00pm - 4.30pm	:	Questions & Answers
4.30pm - 5.00pm	:	Interaction with speakers

DELHI PRINTERS ASSOCIATION

IPAMA

TechNova

PROVIN

TOYOINK

Contact as for G7 & Brand Q Certification

IDEALLIANCE G7 EXPERT CERTIFIED

IDEALLIANCE BrandQ SUPPLY CHAIN EXPERT CERTIFIED

Note: Early Bird Fees Rs.2500/- + 18% GST

Venue address: **Malviya Smriti Bhawan,**
Plot No. 52-53, Deen Dayal Upadhyay Marg (DDU), (Rouse Avenue Road), Near ITO, Opp.Comptroller and Auditor General of India, New Delhi - 110 002.

Saturday, 4th August | 9.30am to 5.30pm

Please RSVP to: Pradip @ +91 91677 59484
Badri @ +91 95662 09372
pressmansolutions@gmail.com

Idealliance South Asia

www.idealliance.in